Bi-Annual Refereed Journal

ISSN : 2456-9658

Global Researcher View

An International Peer Reviewed Journal of Social Sciences and Humanities

RNI No. RAJBIL/2016/71978

Special Issue on the occasion of 150th Birth Anniversary of Mahatma Gandhi

National Seminar on

महात्मा गांधी

विचार, तत्वज्ञान और प्रेरणा

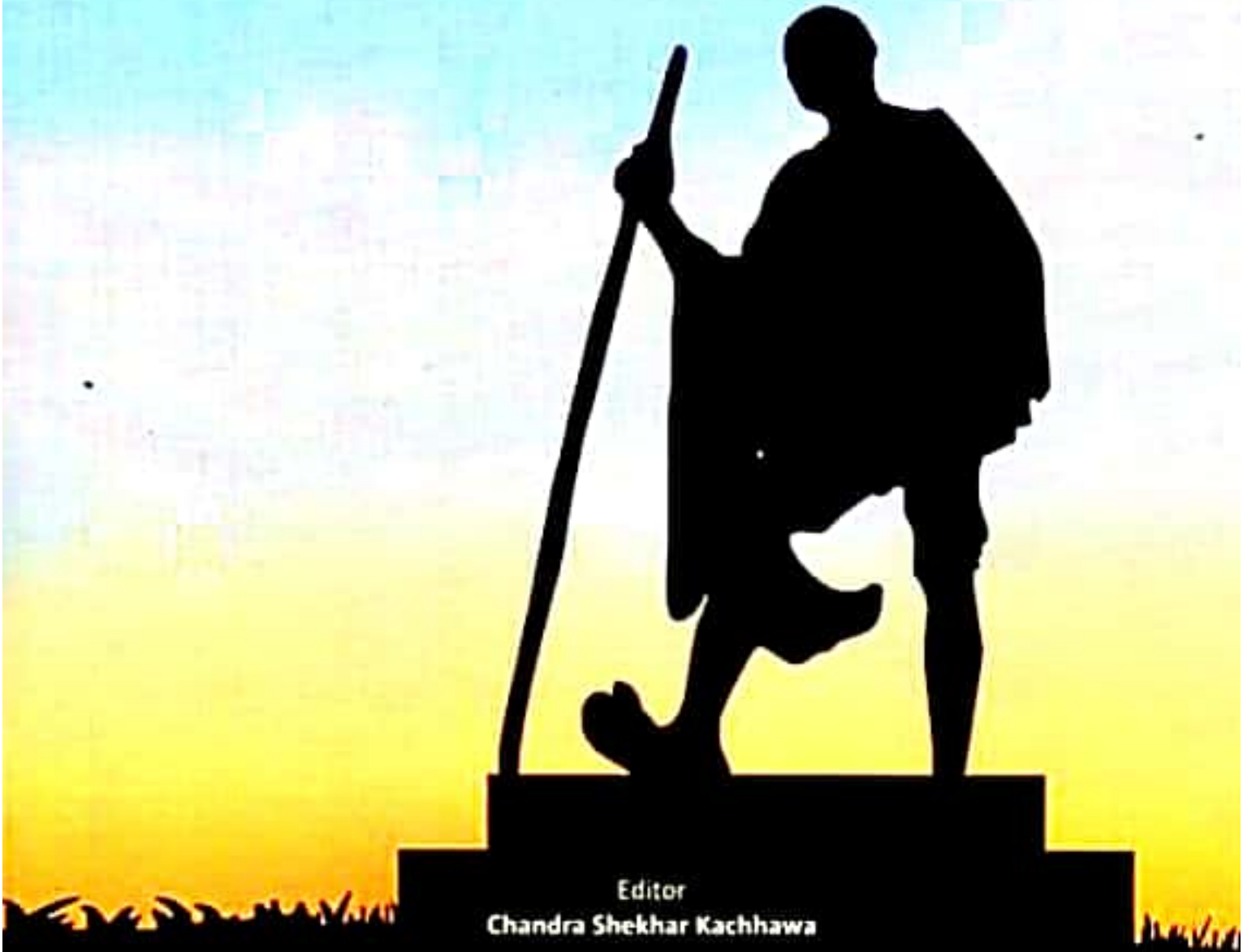

Editor

Chandra Shekhar Kachhawa

globalresearcherview2015@gmail.com

Scanned with CamScanner

ISSN : 2456-9658

Bi-Annual refereed Journal

Global Researcher View

An International Peer Reviewed Journal of Social Sciences and Humanities

RNI No. RAJBIL/2016/71973

Special Issue : 02 October 2019

महात्मा गांधी : विचार, तत्त्वज्ञान और प्रेरणा

Editor
Chandra Shekhar Kachhawa

globalreasearcherview2015@gmail.com

Scanned with CamScanner

ISSN : 2456-9658

GLOBAL RESEARCHER VIEW

An International Peer Reviewed Journal of Social Sciences and Humanities

Editor in Chief
Dr. Chandara Shekhar Kachhawa
Department of History, Govenrment Dungar College, Bikaner

Associate Editor
Dr. Vinay Kaura
Department of International Affairs and Security Studies,
Sardar Patel Police University, Jodhpur

Dr. Rajendra Kumar
Department of History, M.G.S. University, Bikaner (Raj.)

Editorial Board
Dr. Sheila Rai
Department of Political Science, University of Rajasthan, Jaipur
Dr. Bela Bhanot
Government Dungar College, Bikaner
Dr. Dilip Goyal
Department of Policies Science, College of Education, Jaipur
Dr. Vikas Nautiyal
Department of History, , College of Education, Jaipur
Dr. Jibraeil
Department of History, Aligarh Muslim University, Aligarh (UP)

Advisory Board
Prof. G.S.L. Devra
Former Vice Chancellor, Kota Open University, Kota, Rajasthan
Prof. B.L. Bhadani
Former Chairman & Coordinator, CAS, Dept. of History, A.M.U. Aligarh
Prof. G. Ram
Professor of Sociology, Assam University, Silchar, Assam.
Prof. N.K. Pandey
Kendriya Hindi Sansthan, Agra, UP
Prof. S.K. Bhanot
Former Prof. and Head, History and Dean (Social Science) M.G.S. University, Bikaner
Prof. Dev Dutta
Professor of Geography, Himachal Pradesh University, Shimla
Prof. Atul Saklani
Department of History, HNBGU, Srinagar (Garhwal)
Prof. Rajaneesh Kumar Shukla
Member Secretary, Indian Council of Philosophical Research, New Delhi.
Dr. Mahendra Khadgawat
Director, Rajasthan State Archives, Bikaner
All matter, ideas, contents and data Presented in the Journal are of the authors. Editorial Board may not agree with it. Jurisdiction for any dispute will be Bikaner only

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	शोधनिबंध का शीर्षक	लेखक	पृ.क्र.
1	राष्ट्रपिता महात्मा गांधी : बहुआयामी व्यक्तिमत्व	डॉ. दत्तात्रय लक्ष्मण येडसे	7
2	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में महात्मा गांधी और आज का भारत	अंकुश कडुबा राऊत	10
3	भवानी प्रसाद मिश्र के काव्य में गांधी दर्शन	डॉ. विशाला शर्मा	13
4	रामधारी सिंह दिनकर जी के काव्य में महात्मा गांधी	डॉ. रिना आर. सुरडकर	16
5	महात्मा गांधी : श्रम, शिक्षा और ग्राम का दृष्टिकोन	प्रा.शेळके बी.टी.	18
6	प्रार्थना पुरूष	प्रा.डॉ. वसंत माळी	20
7	महात्मा गांधी के शिक्षा और हिंदी भाषा विषयक विचार	डॉ. गजाला वसीम अब्दुल बशीर शेख	22
8	महात्मा गांधी के सामाजिक और शैक्षणिक विचार	डॉ. सोनल रा. नंदनूरवार	24
9	मोहन से महात्मा की उपाधि : गांधी साहित्य एक परिचय	प्रा.डॉ. उत्तम जाधव	26
10	वैश्विक परिप्रेक्ष्य में महात्मा गांधी	डॉ. अलका गडकरी	29
11	महात्मा गांधी के विचार और प्रेमचंद के उपन्यास	डॉ. शिल्पा दादाराव जिवरग डॉ. रमा राहुल दुधमांडे	32
12	महात्मा गांधीजी और हिंदी भाषा	प्रा. सुनिल बाबुराव काळे	35
13	गांधीजी की दृष्टि से मनुष्य	श्रीमती जयश्री बाबुलाल किनारीवाल	37
14	हिंदी साहित्य में गांधी विचार	प्रा.डॉ. मनिषा गंगाराम मुगळीकर	40
15	महात्मा गांधी का ग्राम स्वराज्य	श्री. विकास मच्छिंद्र परदेशी	43
16	महात्मा गांधी और ग्राम विकास	प्रा.डॉ. पवार विक्रमसिंह विजयसिंह	45
17	ग्रामीण विकास में महात्मा गांधीजी का योगदान	प्रा.डॉ. साईनाथ राधेशाम बनसोडे	47
18	महात्मा गांधी : हिंदी एक राष्ट्रभाषा	प्रा.डॉ. सैराज अन्वर तडवी	51
19	गांधी विचार की आधुनिक युग में व्यावहारिक उपयोगिता	प्रा.डॉ. शेख मुख्तयार	53
20	गांधीवाद के परिदृश्य में हिंदी साहित्य	प्रा.डॉ. शेख सैबाशिरीन	56
21	सियारामशरण गुप्त के काव्य पर गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव	डॉ. चांदणी लक्ष्मण पंचांगे	58
22	महात्मा गांधी का ग्राम स्वराज्य एवं वर्तमान स्थिति	प्रा.डॉ. शोभा ज. यशवंते	60
23	सिनेमा पर महात्मा गांधीजी का प्रभाव	प्रा.डॉ. न.पु. काळे	63
24	महात्मा गांधी और ग्रामस्वराज	डॉ. उषा बनसोडे	66
25	महात्मा गांधी का ग्रामस्वराज	डॉ. यादव नामदेव मोरे	69

Scanned with CamScanner

26	महात्मा गांधी : सत्य, अहिंसा तथा धर्म के प्रति विचार	भावना राजपुरोहित	71
27	गांधीजी का प्राथमिक शिक्षा संबंधी दृष्टिकोण	डॉ. सुरेश मुंढे	74
28	हिंदी के परिष्कार महात्मा गांधी	डॉ. मिर्झा अनिसबेग रज्जाकबेग	77
29	गांधीवाद विचारधारा का हिंदी कथात्मक साहित्य पर प्रभाव	डॉ. सुनील डहाळे	82
30	भरत व्यास की रचना में गांधी दर्शन	डॉ. प्रमोद एस. पाटील	86
31	हिन्दी चलचित्रों में महात्मा गांधीजी की विचारधारा का चित्रण : 'रोड टू संगम' चलचित्र के विशेष संदर्भ में	प्रा.डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्थ'	89

Scanned with CamScanner

GLOBAL RESEARCHER VIEW **ISSN : 2456-9658**
An International Peer Reviewed Journal of Social Sciences and Humanities

हिन्दी चलचित्रों में महात्मा गांधीजी की विचारधारा का चित्रण : 'रोड टू संगम' चलचित्र के विशेष संदर्भ में

प्रा.डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य'

• निमंत्रित सदस्य, हिंदी अध्ययन मंडल, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद तथा अध्यक्ष, हिंदी विभाग, व्यंकटेश महाजन वरिष्ठ महाविद्यालय, उस्मानाबाद

"मौलाना साहब! वो आदमी (महात्मा गांधी जी) हम लोगों के लिए अपनी जान दे गया, उसके अपने लोगों ने ही उसे मार दिया, क्योंकि वह हमारी तरफदारी करता रहा और आज हम उसका एक छोटा-सा काम करना चाहते हैं तो इसमें गलत ही क्या है ?" (रोड टू संगम के केन्द्रीय चरित्र हशमत उल्लाह का मौलाना अब्दुल कुरेशी को सवाल!)

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी का चरित्र इतिहासकारों, राजनीतिज्ञों, कवियों, उपन्यासकारों, नाटककारों की तरह ही चलचित्रकारों के लिए भी बहुत बड़े आकर्षण का विषय हमेशा से ही रहा है। वैसे तो महात्मा गांधी जी चलचित्रों के शौकीन नहीं थे। पर उन्होंने अपने जीवन काल मात्र एक ही चलचित्र रामराज (१९४३) देखा था। हिंदी चलचित्रों के आदर्शवादी गीतकार कवि प्रदीप जी ने गांधी जी द्वारा चलाये गये स्वाधीनता के अहिंसक आंदोलन को लेकर एक गीत लिखा था -

'दे दी तूने आजादी बिना खड्ग बिना ढाल।
साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल।।'

(जागृति १९५४)

तो पं० भरत व्यास जी ने गांधी जी के आदर्शों पर न चलनेवाले नेताओं और नागरिकों के विरोध में स्वयं गांधी जी से ही शिकायत की -

'सुन ले बापू ये पैगाम मेरी चिट्ठी तेरे नाम।
चिट्ठी में सबसे पहले लिखता तुझको राम राम।।'

(बालक १९६९)

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के चरित्र और विचारों को संपूर्णतः अथवा आंशिक रूप में अनेक हिंदी चलचित्रों का निर्माण किया गया है। इन चलचित्रों में उनके व्यक्तित्व के चित्रण के साथ-साथ उनके विचारों पर भी पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। महात्मा गांधी जी के जीवन पर आधारित अनेक वृत्तचित्र भी बनाये गये। जैसे महात्मा गांधी ट्वेंटीन्थ सेन्चुरी प्रोफेट (१९५३), आवर्स टू रामा (१९६३), महात्मा : द लाइफ ऑफ गांधी (१९६८), गांधी (२००९), आदि। किन्तु व्यावसायिक चलचित्रों में हॉलीवुड का अंग्रेजी चलचित्र गांधी (१९८२) अत्यंत महत्वपूर्ण चलचित्र है। जिसे हिंदी में डब करके आज भी दिखाया जाता है। रिचर्ड ॲटनबरो ने इस चलचित्र का निर्देशन किया था। इस चलचित्र में प्रसिद्ध अंग्रेजी अभिनेता बेन किंग्सले ने गांधी जी की भूमिका की थी तथा रोहिणी हट्टंगडी ने कस्तूरबा की भूमिका निभाई थी। इस चलचित्र को अनेक ऑस्कर अकादमी पुरस्कारों से नवाजा गया था। इसके उपरांत गांधी जी के दक्षिण अफ्रिका के संघर्ष को दिखानेवाला अंग्रेजी चलचित्र के रूप में श्याम बेनेगल निर्देशित चलचित्र मेकिंग ऑफ महात्मा (१९९६) अत्यंत महत्वपूर्ण चलचित्र है। जिसमें रजीत कपूर ने महात्मा गांधी जी की तथा पल्लवी जोशी ने कस्तूरबा की भूमिका की थी।

जहां तक विशुद्ध हिंदी चलचित्रों का प्रश्न है महात्मा गांधी जी के समग्र जीवन का चित्रण करनेवाला एक भी चलचित्र नहीं बन पाया है। केतन मेहता निर्देशित 'सरदार' (१९९३), कमल हासन निर्देशित 'हे राम' (२००१), फिरोज अब्बास खान निर्देशित 'गांधी : माय फादर' (२००७), राजकुमार हिरानी निर्देशित 'लगे रहो मुन्नाभाई' (२०१०), 'वेलकम बैक गांधी ' (२०१४), 'गांधी : द कॉन्स्पिरसी ' (२०१८) आदि महत्वपूर्ण नाम लिये जा सकते इनमें क्रमशः अन्नू कपूर, नसिरुद्दीन शाह, दर्शन जरीवाला, दिलीप प्रभावळकर आदि ने महात्मा गांधी जी की भूमिका को पूरी शिद्दत के साथ निभाया था। 'मैंने गांधी को नहीं मारा' (२००५) और 'रोड टू संगम' (२०१०) दो ऐसे चलचित्र बने हैं, जिनमें गांधी जी का चरित्र प्रत्यक्ष रूप में विद्यमान तो नहीं पर परोक्ष रूप में विचारों के माध्यम से छाया रहता है। इनमें से पहला गांधी जी की हत्या को लेकर है तो दूसरी गांधी जी की रक्षा को इलाहाबाद के त्रिवेणी संगम में बहाने की कहानी को लेकर है।

शशिकांत छेड़ा प्रस्तुत इस चलचित्र का निर्माण सेठीया ऑडिओ विडीओ प्रायवेट लिमिटेड द्वारा किया गया है। इस चलचित्र के निर्माता अमित छेड़ा है। सह निर्माता के रूप में वसंत छेड़ा और रेखा छेड़ा के नाम आते हैं। इस चलचित्र की कथा का लेखन और निर्देशन अमित राय ने किया है। कार्यकारी निर्माता के रूप में समीर शहा और सुनील शर्मा हैं। संदेश शांडिल्य, नीतिनकुमार गुप्ता, परेश हरिया और विजय कुमार मिश्रा ने संगीत दिया है। सुधीर नेमा, नरेश मेहता, अल्लमा इकबाल, जॉन हेन्री न्यूटन, संत नरसी मेहता और गुरू ग्रंथ साहिब के गीतों को संगीतबद्ध किया गया है। साथ ही प्रमुख भूमिकाओं में परेश रावल (हशमत उल्लाह), ओम पुरी (मोहम्मद अली कसूरी), पवन मल्होत्रा (मौलाना अब्दुल कुरेशी) , जावेद शेख (डॉ० बेनर्जी), स्वाती चिटणीस (आरा), राकेश श्रीवास्तव (इनायत), मसूद अख्तर (जुल्फीकार) , युसुफ हुसैन (गफार), राजन भिसे (शौकत), जी० पी० सिंह (हकीम), विजय मिश्रा (रजत) और

Scanned with CamScanner

स्वयं तुषार गांधी (स्वयं की अतिथि भूमिका में) आदि जाने-माने कलाकारों ने चार चाँद लगा दिये हैं। किन्तु इस चलचित्र का प्राण कोई है तो कथा ही है। स्वयं कथाकार ही निर्देशक होने से और भी अधिक प्रभाव बढ़ जाता है।

इस चलचित्र की कहानी ही इसकी आत्मा है। चलचित्र के आरंभ में ही महात्मा गांधी जी के निम्न वचन टंकित रूप में दिखाये गये है - " मैं अकेला पड़ जाऊँ या फिर मार दिया जाऊँ पर जब तक मेरा विश्वास जिन्दा है, मर कर भी मेरी आवाज सुनाई देगी और इससे अच्छी बात और क्या हो सकती है? " अब हम विस्तार से 'रोड टू संगम' इसी चलचित्र की कथा के बारे में जान लेने का प्रयास करेंगे। एक सच्चाई यह है कि गांधी जी की मृत्यु के उपरांत उनकी अस्थियों के अनेक विभाग कर भारत की सभी नदियों में बहा दी गई थी । किन्तु किन्हीं कारणों से उनकी अस्थियों के एक कलश का विसर्जन नहीं हो पाया था। ओडिसा की स्टेट बैंक के लॉकर रूम में गांधी जी की अस्थियों का कलश रखा होता है। गांधी जी के प्रपौत्र श्री० तुषार गांधी जी को इस बात का पता चल जाता है, तो उस कलश को लेने ओडिसा पहुंच जाते हैं। बैंक के प्रबन्धक क्षमायाचना करते हुए इस कलश को तुषार गांधी जी को सौंप देते हैं। तुषार गांधी जी यह तय कर लेते है कि उत्तर प्रदेश सरकार की सहायता से वे इस कलश का विसर्जन गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों के संगमस्थल अर्थात् प्रयाग (इलाहाबाद) की त्रिवेणी धारा में ही इस कलश का पूरे धार्मिक विधि-विधान से विसर्जन करेंगे। उत्तर प्रदेश सरकार के महकमे का एक और तर्क है कि यदि इस कलश का विसर्जन उसी लॉरी में से शोभायात्रा निकालकर होता है तो और भी अधिक सुसंबद्ध रहेगा। किन्तु इस काम में एक कठिनाई यह निर्माण हो जाती है कि उस समय की लॉरी तो मिल जाती है, पर उस लारी का फोर्ड वी - ८ इंजिन खराब हो चुका होता है। यदि उसी इंजिन का प्रयोग किया जाये तो गांधी जी को सही मायने में उचित श्रद्धांजली हो सकती है। अब समय रहते इस इंजिन की मरम्मत करना अत्यावश्यक हो जाता है।

घूम-फिरकर इस अनोखे इंजिन को ठीक करने का काम इलाहाबाद के सुप्रसिद्ध मोटार मैकेनिक हशमत उल्लाह (परेश रावल) को सौंप दिया जाता है बिना सच्चाई बताये। हशमत उल्लाह अपने दोस्तों के साथ प्रतिदिन तड़के घूमने निकल जाते हैं। ये सभी दोस्तो में सबसे अधिक तंदुरूस्त है। ये अपने दोस्तों से हँसी-मजाक भी कर लेते है। ये हकीम से अधिक डॉक्टर बैनर्जी (जावेद शेख) की दवाइयों में विश्वास रखते है। उनके घर उनकी पत्नी आरा (स्वाती चिटणीस) और उनका बेटा है। वे मोटार मैकेनिक की दुकान चलाते है। उन्होंने अनेक बार सरकारी काम भी किये है। सरकारी काम सही समय पर और बढ़िया ढंग से करने के कारण उपर्युक्त काम हशमत उल्लाह को ही सौंपा जाता है। हशमत उल्लाह एक कुशल मैकेनिक होने के साथ-साथ इलाहाबाद की मस्जिद के वर्किंग कमिटी के जनरल सेक्रेटरी भी है। वे अपने व्यवसाय और समाजसेवा के कार्य को बड़ी ईमानदारी से निभाते भी है। किन्तु उनके इस खुशनुमा जीवन में एक बवाल खड़ा हो जाता है, इस नये सरकार काम को लेकर ही।

संपूर्ण देश की परिस्थितियाँ बिगड़ने लगती है। हर मुसलमान को आतंकवादी मानकर शक की नजरों से देखा जा रहा होता है। कुछ नवयुवकों को इसी शक में बंदी बनाया भी है। इस बीच मस्जिद-ए-आजम कमिटी का चेअरमन मोहम्मद अली कसूरी (ओम पुरी), मौलवी मौलाना अब्दुल कुरेशी (पवन मल्होत्रा) के साथ मिलकर कमिटी की सभा में सरकार के मुसलमान विरोधी रूख के खिलाफ आन्दोलन करवाता है। इस आन्दोलन में कसूरी जी के भतीजे की मौत हो जाती है। कसूरी चिढ़कर अपने मोहल्ले की सारी दुकानें बन्द करवा देता है। अब परिणामत: हशमत उल्लाह को जो सरकारी काम दिया होता है, उसे भी बन्द रखने का आदेश मौलाना देते है। हशमत भी कोई साधारण सरकारी काम मानकर इस काम को भी रोक देते हैं, पर बार-बार सरकारी कार्यालयों से काम पूरा करने के संदेश आने लगते है। अब हशमत उल्लाह इस पशोपेश में है कि अपनी कौम का साथ देने के लिए काम बन्द रखें या सरकारी काम समय से करने के लिए पूरी कौम का गुस्सा बर्दाश्त करें। हशमत अपने मित्र डॉक्टर बैनर्जी को साथ लेकर सरकारी कार्यालय में पहुंच जाता है, जहाँ पुरानी लॉरी को सजाया जा रहा है। सरकारी अधिकारी किसी बैठक में शामिल होने के कारण हशमत से उनकी मुलाकात तो नहीं हो पाती, पर एक साधारण कर्मचारी के माध्यम से हशमत को सारी बातें समझ में आ जाती है। हशमत कमिटी की बैठक में अपने सरकारी काम यानी कि महात्मा गांधी जी के अस्थिकलश के विसर्जन का जिक्र करते हुए उस काम को जारी रखना चाहते है। पर कुरेशी और कसूरी के षड्यंत्र के कारण यह काम असंभव हो जाता है।

कसूरी के भतीजे के जनाजे में भी हशमत को शामिल होने नहीं दिया जाता। अब विवश होकर हशमत अपना काम शुरू करना चाहते है, पर उन्ही के सारे दोस्त दुश्मन बन जाते है। ये हशमत को अपनी दुकान खोलने नहीं देते और घर पर काम करने की भी इजाजत नहीं देते। सारे के सारे लोग हशमत को बहिष्कृत कर देते है। ये दुकान की चाबी भी छिन लेते है। ऐसे में हशमत उल्लाह गांधी जी के मार्ग का अनुसरण करते हुए अनशन पर बैठ जाते है। अन्तत: उनके मित्र उन्हे दुकान की चाबी लौटाते है। इंजिन की मरम्मत काम फिर से शुरू हो जाता है। अपने काम के प्रति लगन और बापू के प्रति सच्चा भक्ति भाव होने के कारण हशमत के सारे दोस्त धीरे-धीरे उनका साथ देने लग जाते है। इस कारण कसूरी और कुरेशी और भी अधिक चीढ़ जाते है। ये हशमत को कमिटी के जनरल सेक्रेटरी पद से बरखास्त कर देते है। एक रात दुकान से घर वापिस जाते समय हशमत उल्लाह पर हमला भी हो जाता है। पर वे इन हमलावरों का डटकर मुकाबला भी करते है। किन्तु गांधी जी के बताये मार्ग के माध्यम से ही। उनमें नैतिकता और आत्मविश्वास का ईश्वरीय बल आ जाता

Scanned with CamScanner

है। अपने पर हुए हमले को गिरने का बहाना बनाकर किसी से भी सच साझा नहीं करते।

इधर शहर के हालात भी धीरे-धीरे सामान्य हो जाते हैं और आतंकवादी होने के शक में बन्दी लोगों को मुक्त भी किया जाता है। पर मुक्त किये गये लोगों से हशमत को मिलने नहीं दिया जाता। हशमत अपने बेटे और दोस्तों के साथ मिलकर इंजन ठोक ठाक कर लेते हैं। हशमत उल्लाह अपने दोस्तों और सरकारी कर्मचारियों की सहायता से सीरी में रखवा देते हैं। थोड़े-से प्रयास के बाद सीरी चालू हो जाती है। सभी लोग खुश हो जाते हैं। अस्थिकलश विसर्जन यात्रा की तैयारी जोरों से होती है। महात्मा गाँधी जी के अस्थिकलश के स्थान पर सर्वधर्मीय सभाएँ और भजन-कीर्तनों का आयोजन किया जाता है। इलाहाबाद (प्रयाग) की पूरी जनता उत्साहित होती है। सारे लोग बाग तैयारी करने लगते हैं। तुषार गाँधी जी अस्थिकलश विसर्जन का दिन मुकर्रर करते हैं। अस्थिकलश विसर्जन यात्रा किस मार्ग से होकर जाये इसका भी निर्णय होता है। किन्तु हशमत उल्लाह इस यात्रा का मार्ग बदलने का अनुरोध करते हैं। वे इस बात का आग्रह करते हैं कि अस्थिकलश यात्रा उनके मोहल्ले से होकर गुजरनी चाहिए। सभी कर्मचारी हक्के बक्के रह जाते हैं। पर हशमत उल्लाह अपनी बात पर अटल रहते हैं।

इधर हशमत उल्लाह छोटे बच्चों को पतंग का लालच देकर हर एक घर में अस्थिकलश विसर्जन यात्रा में शामिल होने की विनय का खत भेजने में सफल हो जाते हैं। इस बात से रुष्ट होकर कसूरी और कुरैशी हशमत उल्लाह को डाँटते भी हैं। पर हशमत उल्लाह महात्मा गाँधी जी ने मुसलमानों पर किये उपकारों का स्मरण कराते हैं और उन्हें भी अस्थिकलश विसर्जन यात्रा में शामिल होने का अनुरोध करते हैं।

जिस दिन सुबह सुबह महात्मा गाँधी जी की अस्थिकलश विसर्जन यात्रा निकलती है, तो सारे इलाहाबादवासी यात्रा का रास्ता साफ करने लग जाते हैं। सीरी धीरे-धीरे पूरे नगर से गुजरते हुए हशमत उल्लाह के मोहल्ले से गुजरने लगती है। हशमत उल्लाह को भरोसा होता है कि हिन्दुओं के मोहल्लों में जिस गर्मजोशी और श्रद्धा से यात्रा का स्वागत होगा वैसा ही स्वागत उसके मोहल्ले में भी होगा। थोड़ा इन्तजार करने के बाद कसूरी अपने सभी साथियों समेत यात्रा में शामिल हो जाता है। कसूरी इस समय हशमत उल्लाह से भी गले मिलता है और दोनों के गिले शिकवे दूर हो जाते हैं। इस प्रकार एक साधारण मोटर मैकेनिक गाँधी जी के विचारों का अनुसरण कर के अपने दुश्मनों के दिलों को भी जीत लेता है।

तुषार गाँधी जी महात्मा गाँधी जी की अस्थियों का पवित्र त्रिवेणी संगम में विसर्जन करते हैं और चलचित्र समाप्त हो जाता है। ऐसे महान चलचित्र को अनेक देशों के चलचित्र समारोहों में प्रदर्शित किया गया और अनेक पुरस्कार भी प्राप्त हो गये। भारत में भी २०१२ के स्टार स्क्रीन पुरस्कार समारोह में सर्वश्रेष्ठ कहानी का पुरस्कार प्रदान किया गया। कुल मिलाकर एक महान सन्देश देनेवाले इस चलचित्र को प्रत्येक भारतीय को कम से कम एक बार तो अवश्य देखना चाहिए।

।। जय हिन्दी, जय नागरी ।।

सदर्भ

यू-ट्यूब पर उपलब्ध हिन्दी चलचित्र 'रोड टू संगम'

Scanned with CamScanner

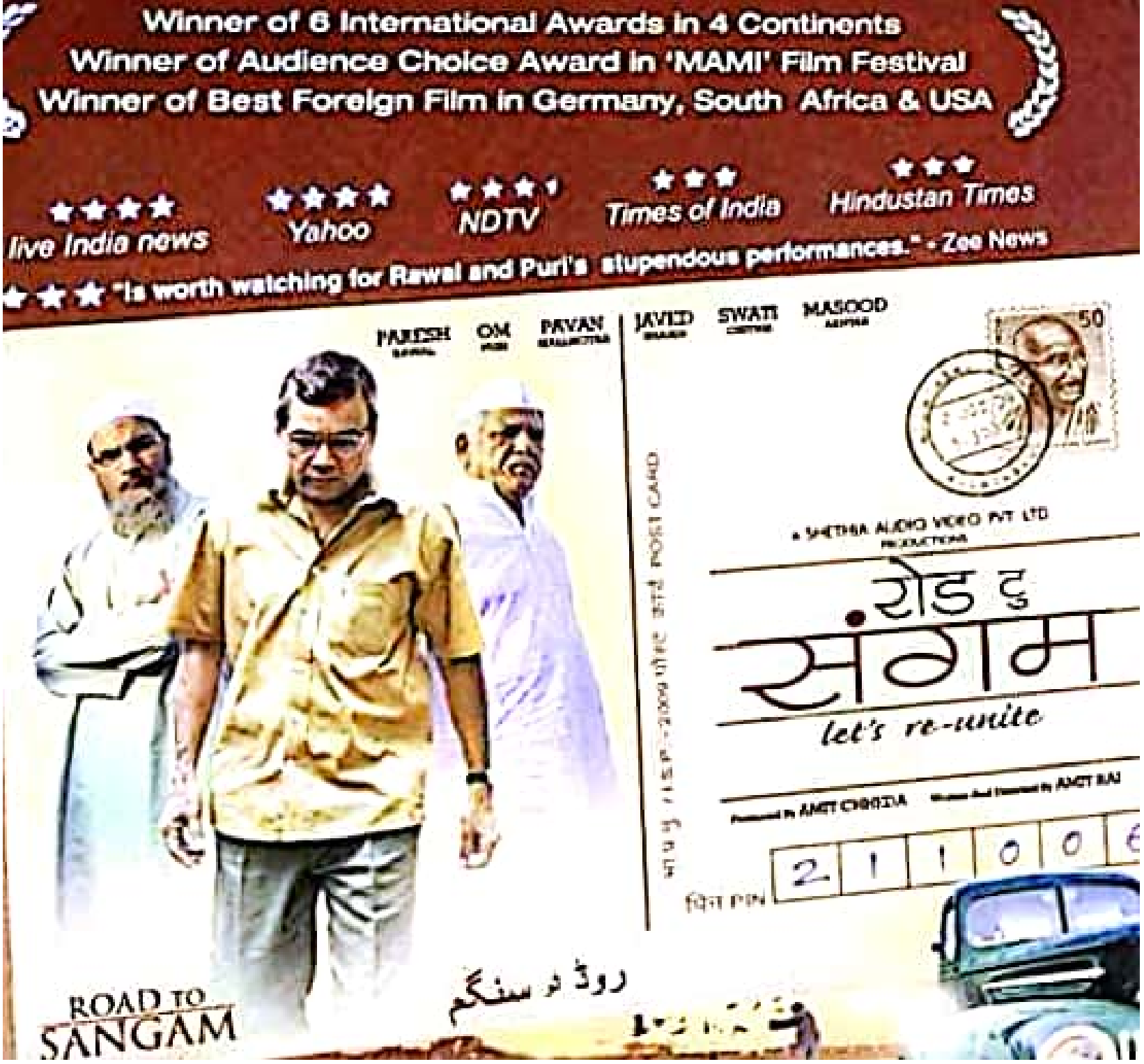

Scanned with CamScanner